महाविद्या कमला साधना

पुरुषोत्तम मास की एकादशी, पूर्णिमा, अमावस्या अथवा पुरुषोत्तम मास के किसी भी दिन साधक स्नान, ध्यान कर पीले वस्त्र धारण कर पीले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुख कर बैठ जाएं और अपने सामने एक बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर लक्ष्मी चित्र स्थापित कर दें। लक्ष्मी चित्र के समीप ही गुरु चित्र स्थापित कर, गुरु चित्र का पंचोपचार पूजन कर लें। गुरु पूजन के पश्चात् कमला साधना में आगे का पूजन क्रम निम्न अनुसार है –

पूजन के इस क्रम में सर्वप्रथम **'मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त कमला यंत्र'** को शुद्ध जल से धो लें। इसके पश्चात् कमला यंत्र को पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद और शक्कर) से स्नान करायें। पंचामृत स्नान के पश्चात् पुनः शुद्ध जल से धोकर लक्ष्मी चित्र के सम्मुख रख दें। इसके पश्चात् दोनों हाथ जोड़कर नवग्रहों की शांति हेतु प्रार्थना करें –

नवग्रह प्रार्थना – *ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च गुरुश्च शुक्रः शनि राहुकेतवः सर्वेग्रहाः शांतिकरा भवन्तु।।*

नवग्रह प्रार्थना के पश्चात् एक थाली में नया पीला वस्त्र बिछाकर उसे बाजोट पर रख दें, कपड़े के ऊपर सिन्दूर से सोलह बिन्दियां लगावें। सबसे ऊपर चार फिर उनके नीचे चार-चार बिन्दियां चार पक्तियों में, इस प्रकार कुल 16 बिन्दियां लगा कर प्रत्येक बिन्दी पर एक-एक लौंग तथा एक-एक इलायची रख कर फिर इनका अष्टगंध से पूजन करें और हाथ जोड़ कर निम्न ध्यान मंत्र का उच्चारण करें –

उद्यन्मार्तण्ड-कान्ति-विगलित कवरीं कृष्ण वस्त्रवृतांगाम्।
दण्डं लिंगं कराब्जैर्वरमथ भुवनं सन्दधतीं त्रिनेत्राम्।।
नाना रत्नैर्विभातां स्मित-मुख -कमलां सेवितां देव-देव-सर्वै
र्भार्यां रा ह्रीं नमो भूत स-रवि-कल -तनुमाश्रये ईश्वरीं त्वाम्।।

जो साधक संस्कृत पढ़े लिखे नहीं हैं, उनको चिंता नहीं करनी चाहिए और धीरे-धीरे शब्द उच्चारण करते हुए यह ध्यान मंत्र पढ़ सकते हैं।

इसके बाद मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त **'कमला यंत्र'** पीले वस्त्र पर जिसमें सोलह बिन्दियां लगाई हैं, उसी पर पूर्ण श्रद्धा के साथ पुष्पों का आसन देकर स्थापित करें और अष्टगंध से इस यंत्र पर सोलह बिन्दियां लगा दें।

इसके पश्चात् कमला यंत्र के चारों ओर लक्ष्मी के द्वादश स्वरूप द्वादश ज्योतिर्रत्न का स्थापन करें। ये लक्ष्मी के **महालक्ष्मी, ऋणमुक्ता, हिरण्यमयी, राजतनया, दारिद्र्य हारिणी, कांचना, जया, राजराजेश्वरी, वरदा, कनकवर्णा, पद्मासना, सर्वमांगल्या** द्वादश रूपों के प्रतीक हैं। कमला की इन द्वादश शक्तियों का पूजन अक्षत, कुंकुम, पुष्प इत्यादि से निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए करें –

ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं महालक्ष्मी स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं ऋणमुक्ता स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं हिरण्यमयी स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं राजतनया स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं दारिद्र्य हारिणी स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं कांचना स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं जया स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं राजेश्वरी स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं वरदा स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं कनकवर्णा स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं पद्मासना स्थापयामि नमः।
ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं सर्वमांगल्या स्थापयामि नमः।

इसके बाद दोनों हाथों में पुष्प तथा अक्षत लेकर निम्न मंत्र से अपने घर में भगवती कमला का आह्वान करते हुए यंत्र पर पुष्प, अक्षत समर्पित करें –

विनियोग –

अस्य मंत्रस्य ब्रह्मऋषि गायत्रीच्छन्दः श्री जगन्माता महालक्ष्मी देवता श्रीं बीजं सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोग।

इसके पश्चात् न्यास सम्पन्न करें –

न्यास –

ॐ ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि।
गायत्रीश्छन्दसे नमः मुखे।
श्री जगन्माता महालक्ष्म्यै नमः।
विनियोगाय नमः सर्वांगे।

इसके बाद साधक सामने शुद्ध घृत का दीपक जलाएं, उसका पूजन करें तत्पश्चात् सुगन्धित अगरबत्ती प्रज्वलित करें, ऐसा करने के बाद साधक इस यंत्र पर कुंकुम समर्पित करें, पुष्प तथा पुष्प माला पहनाएं, अक्षत चढ़ावें तथा नैवेद्य का भोग लगावें, सामने ताम्बूल, फल और दक्षिणा समर्पित करें।

भगवती कमला के आह्वान और पूजन के पश्चात् इस साधना में **'कवच'** पाठ का विधान है। इस दुर्लभ कवच का पांच बार पाठ करें, जो महत्वपूर्ण है, कवच पाठ से यंत्र का साधक के प्राणों से सीधा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, और साधना सम्पन्न करने पर साधक को ओज, तेज, बल, बुद्धि तथा वैभव प्राप्त होने लग जाता है।

सनत्कुमार उच्चरित लक्ष्मी तंत्र कवच है

कमला कवच

ऐंकारी मस्तके पातु वाग्भवी सर्व सिद्धिदा।
ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षु युग्मे च शांकरी।
जिह्वायां मुख-वृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोर्नसि।
ओष्ठाधरे दन्त पंक्तौ तालु मूले हनौ पुनः।।
पातु मां विष्णु वनिता लक्ष्मीः श्री विष्णु रूपिणी।
कर्ण-युग्मे भुज-द्वये-रतन-द्वन्द्वे च पार्वती।।
हृदये मणि-बन्धे च ग्रीवायां पार्श्वयोर्द्वयोः।
पृष्ठदेशे तथा गृह्ये वामे च दक्षिणे तथा।।
स्वधा तु-प्राण-शक्त्यां वा सीमन्ते मस्तके तथा।
सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी समुन्नतिः।।
पुष्टिः पातु महा-माया उत्कृष्टिः सर्वदावतु।
ऋद्धिः पातु सदादेवी सर्वत्र शम्भु-वल्लभा।।
वाग्भवी सर्वदा पातु, पातु मां हर-गेहिनी।
रमा पातु महा-देवी, पातु माया स्वराट् स्वयं।।
सर्वांगे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णु-माया सुरेश्वरी।
विजया पातु भवने जया पातु सदा मम।।
शिव-दूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा।
भैरवी पातु सर्वत्र भैरुण्डा सर्वदावतु।।
पातु मां देव-देवी च लक्ष्मीः सर्व-समृद्धिदा।
इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्व-सिद्धये।।

यह कवच जो अपने आप में महत्वपूर्ण है, यदि साधक नित्य इसके ग्यारह पाठ करता है, तो भी उसे जीवन में धन, वैभव, यश सम्मान प्राप्त होता रहता है।

साधना में इसके पांच पाठ करें। कमला कवच के पाठ के पश्चात् **'कमल गट्टा माला'** का कुंकुम, अक्षत, पुष्प इत्यादि से पूजन करें और पूजन के पश्चात् **'कमल गट्टा माला'** से निम्न कमला मंत्र की 16 माला मंत्र जप करें।

कमला मंत्र

।। ॐ ऐं ईं ह्रीं श्रीं क्लीं ह् सौः जगत्प्रसूत्यै नमः।।

जब सोलह माला मंत्र जप हो जाय तब भगवती लक्ष्मी की विधि-विधान के साथ आरती सम्पन्न करें और उस यंत्र, माला एवं द्वादश ज्योतिर्रत्न को पूजा स्थान में रख दें।

सवा माह पश्चात् सम्पूर्ण साधना सामग्री को जल में विसर्जित कर दें।

– प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. – 750/–